- चतुर्थ अध्याय -

"निमिषा" उपन्यास में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन

प्रस्तावना :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है । अत: वह समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है । इनके समुदाय को ही समाज कहा जाता है । अर्थात् व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध अटूट है । समाज में एक ही प्रकार के लोग निवास नहीं करते इसी वजह से इनमें वर्ग तैयार हुए । फिर इनके अलग-अलग समुदाय बन गये । हर एक की आर्थिक स्थिति एक ही न होने के कारण उसी आधारपर भी समाज में कई वर्ग निर्माण हो गए । हर एक वर्ग के रीति-रिवाज, परम्पराएँ, गुण, आचार-व्यवहार के नियम आदि कई तरिके होते हैं । ये ही उन्हें एक-दूसरे से अलग सिद्ध करते हैं । हमारे देश में यह वर्गभेद सदियों से चला आ रहा है । क्योंकि सभी लोग एक श्रेणीवाले नहीं हो सकते । चाहे मार्क्स ने प्रत्येक समाज में दो प्रधान वर्ग स्वीकार किये हैं फिर भी आज समाज में उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग ये तीन वर्ग पाए जाते हैं । उच्चवर्ग निम्नवर्ग का शोषण करता है । मध्यवर्ग उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का है । इस वर्ग में आनेवाले लोग स्वयं अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं और निरंतर संघर्ष करते हैं ।

१. उच्चवर्ग -

चाहे कोई भी कालखण्ड क्यों न हो, अगर व्यक्ति उच्चवर्गीय हो तो उसके सामने भौतिक स्तर की कोई भी समस्याएँ नहीं होती । आज के युग का उच्चवर्गीय व्यक्ति तो पूँजी के आधारपर सारी समस्याओं को सुलझाता है । आज का यह उच्चवर्गीय व्यक्ति विदेशी संस्कृति से प्रभावित है और उसी के अनुसार चलना चाहता है । इसी वजह से ये वर्ग महत्त्वाकांक्षा से युक्त होता

है। अपनी महत्त्वाकांक्षाएँ किसी भी तरह से क्यों न हो पूरी करने की ताकत इनमें होती है।

२. मध्यवर्ग -

मध्यवर्ग को हम औद्योगिक क्रांति की उपज कह सकते हैं। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप ग्रामीण जनता शहरों की ओर भागने लगी। संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ और शहरों में नौकरी के निमित्त रहनेवाले इन लोगों का एक अलग ही वर्ग निर्माण हुआ। इन लोगों का रहन-सहन, खान-पान, इनकी समस्याएँ भी एक जैसी होने के कारण ये जल्द ही एक-दूसरे के निकट आने लगे और इन लोगों की मानसिकता भी एक जैसी ही बन गयी। इस वर्ग को सबसे ज्यादा संघर्ष करना पडता है। महत्त्वाकांक्षा के कारण ये अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए जी-जान लगता हैं परंतु उसमें सफल नहीं हो पाता और इच्छाओं का दमन भी यह वर्ग नहीं कर सकता। इसी वजह से तनाव, घुटन, निराशा इसी वर्ग में अधिक दिखाई देती है। अर्थाभाव के कारण यह वर्ग हमेशा असंतुष्ट रहता है। बेकारी और उससे उत्पन्न समस्याओं का सामना भी इसी वर्ग को अधिक करना पडता है। मध्यवर्ग हमेशा ही उच्चवर्ग के सपने देखता है। वह उन्हीं के समान रहने की कोशिश करता है। उच्चवर्ग की देखा-देखी मध्यवर्गीय समाज के लोगों में भी दिखावटीपन और पाखण्ड काफी हद तक भरा हुआ है। हम अपने वास्तविक रूप को दूसरों के सामने उजागर नहीं करना चाहते। भीतर से खोखले होकर भी उपर ठाठ-बाट में विश्वास करते हैं। यह कारण है कि दोहरी जिन्दगी जीने के लिए आज का मध्यवर्गीय मनुष्य विवश हो गया है।

आजादी के बाद मध्यवर्ग की स्थिति :-

देश आजादी के बाद लगभग सभी प्रकार की अर्थात राजनीतिक,

सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, बौद्धिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि में परिवर्तन आ गया। इस परिवर्तन में मध्यवर्ग भी पीछे न रहा। मध्यवर्गीय समाज में नारी की आजादी के बाद कुछ अच्छी स्थिति हो गयी। परिणामस्वरूप आर्थिक कठिनाईयों से त्रस्त संयुक्त परिवार की परंपरा में दरार उत्पन्न हो गयी, और सम्बन्धों अलगाव उत्पन्न हो गया। स्वतंत्रता से पूर्व नारी की तुलना में स्वातंत्र्योत्तर नारी के अधिकारों में परिवर्तन आ गया। शिक्षा के प्रभाव से नारी अपने अधिकारों की माँग करने लगी और उसमें सजगता आई। समाज में प्राचीन मूल्यों और परम्पराओं का विघटन होने लगा और नवीन मान्यताओं की स्थापना का दौर प्रारंभ हुआ। नारी अपने आस्तित्व के प्रति सजग हो गयी। समाज में अपनी पहचान बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील हो गयी।

हमारे देश में प्राचीन काल से चली आ रही संयुक्त परिवार की नींव उखड़ चुकी है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से, बेरोकटोक जीवन यापन करने की प्रवृत्ति के विकास से, स्वतंत्र रहने की इच्छा ने संयुक्त परिवार की परम्परा विघटित हो रही है। मानव जीवन के तारे रिश्ते आजकल पैसे से तौले जाते हैं। यह भी वजह मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार नष्ट होने के पीछे रही है। अगर परिवार का हर एक सदस्य अपने पैरों पर खड़ा न हो तो परिवार टूट ही जाते हैं। इसके साथ अन्य भी कई परिस्थितियाँ ऐसी हैं जिन्होंने इस वर्ग को प्रभावित किया। जैसे भ्रष्टाचार, आतंकवाद, मानवतावाद, दयनीयता, अनुशासनहीनता, साम्प्रदायिकता, आदेशहीनता, जनवादी चेतना, मकानों की कमी, प्राकृतिक विपत्ति आदि।

मध्यवर्गीय शोषिता नारी :-

प्राचीन काल से नारी पुरुष की अर्धांगिनी मानी जाती है । कोई भी कार्य नारी के बिना अपूर्ण होता है । मध्यकाल ने उसे शिक्षा से वंचित कर दिया गया और उसकी प्रगति रोक दी गयी । स्वातन्त्र्योत्तर काल में नारी पुरुष के हाथों का खिलौना मात्र ही बनी रही । आधुनिक काल मे नारी का फिर से विकास हुआ । उच्च पद उसे प्राप्त होने लगे । लेकिन फिर भी मध्यवर्गीय नारी अपनी मर्यादाओं को लेकर ही चलती है । इसी वजह से चाहे कितनी भी पढी-लिखी स्त्री क्यों न हो उसे पति के अधिन ही होकर रहना पड़ता है । नौकरी करनेवाली स्त्री भी खुद निर्णय नहीं ले सकती । उसकी ओर देखने का समाज का नजरिया भी अलग ही होता है । इसी वजह से आधुनिक काल की मध्यवर्गीय नारी आज शोषिता है ।

उपेंद्रनाथ अश्क :-

आधुनिक काल के महत्त्वपूर्ण उपन्यासकारों मे उपेंद्रनाथ अश्क जी का नाम लिया जाता है । अश्क जी के अधिकतर उपन्यास मध्यवर्ग से ही ताल्लुक रखते हैं । जिन परिस्थितियों को अश्क जी ने भोगा, उनका अत्यंत यथार्थ अंकन उन्होंने अपने साहित्य में किया है । अश्क जी का साहित्य आरम्भ से ही काफी विवादग्रस्त रहा है । उन्होंने जो विचार अपने उपन्यासों के माध्यम से या अन्य साहित्य विधा के माध्यम से प्रस्तुत किये हैं उसे सहज-सामान्य लोगों की मानसिकता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं रहती । इसलिए उनके उपन्यासों पर अश्लीलता का और बोझिलता का आरोप लगाया जाता है । साथ ही इनके उपन्यासों पर पुनरावृत्ति के दोष का आरोप लगाया जाता है ।

वैसे देखा जाए तो अश्क जी ने कई उपन्यास लिखे है जिनसे उनका साहित्य में एक श्रेष्ठ स्थान बन गया है । उनके द्वारा लिखे कई उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन साफ झलकता है । मध्यवर्ग में ही जन्म तथा बचपन बीत जाने के कारण

शायद उसकी प्रतिक्रिया उनके साहित्य में उभरी हो । परंतु उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन के कई ऐसे पहेलूओं को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है, जिनकी ओर सामान्य मध्यवर्गीय मनुष्य का ध्यान नहीं जाता । साथ ही सामान्य मध्यवर्गीय लोगों की आम समस्याओं को भी उन्होंने चित्रित किया है ।

अश्क जी का मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करनेवाला एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास "निमिषा" है । इस उपन्यास के नायक, नायिका तथा नायक की पत्नी सभी मध्यवर्ग से ही ताल्लुक रखनेवाले पात्र हैं । "निमिषा" सामाजिक उपन्यास है । "निमिषा" बचपन से ही अत्यंत पीड़ित जीवन बीता रही है। बचपन में जब उसके माता-पिता गुजर जाते हैं तो वह अपने मामा-मामियों के पास रहने लगती है । उसके वहाँ मामियों के व्यवहार के कारण वह फिर अपने चाचा के पास रहने लगती है । उसके चाचा वकील हैं और हमेशा अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं । उन्होंने निमिषा को बहुत ही लाड-प्यार से पाला है । इसी वजह से उसे किसी भी प्रकार की कमी महसूस नहीं हुई । लेकिन बाद में उनके घर में उसकी चाची ने कदम रखा । वह एक फूहड़ नारी थी जो सलीका पसंद नहीं करती थी । इसी वजह से उनमें अनबन होने लगी । चाचा भी चाची का ही पक्ष लेते हैं । मध्यवर्गीय पुरुषों की यह प्रवृत्ति होती है कि वे शादी के बाद अपनी भतीजी हो, बहन हो सभी की अपेक्षा अपनी पत्नी की ओर अधिक ध्यान देते हैं । चाची और भतीजी के झगड़े मे चाचा द्वारा चाची का पक्ष लिया जाना, इसी प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है।

निमिषा की सहेली कनक एक उच्चवर्गीय लडकी है । उसे चित्रकारी पसंद है और वह चित्र अच्छी तरह निकाल लेती है । लेकिन उसके चित्रोंपर किसी न किसी की छाप है । उसके तीन चित्र लाहौर कल्चरल लीग के हॉल में हो रहे प्रदर्शनी में लगाए गये । तब वहाँ आनेवाले उच्चवर्गीय लोगों का वर्णन करते हुए उनकी तुलना में मध्यवर्गीय लोग कैसे लगते हैं इस बात का चित्रण किया गया है - "उसके सदस्य उच्चवर्ग के बुद्धिजीवी थे - बड़ी ऊँचाई से साहित्य अथवा कला पर बात करनेवाले - साफ-सुथरे, क्रीज किए हुए सूट, खुले गले और आस्तिनों में सुंदर चमचमाते कफ - लिंक्सवाली सिल्क की कमीजे या

फिर अचकन, पायजामे, फ्लेक्स के जूते पहने मर्द और कीमती साड़ियाँ, बाहोंपर एकाध चूड़ी या कलाई - घड़ी और गले में कीमती हारो में सुसज्जित नाप-नाप कर कदम रखती महिलाएँ - इस जेण्ट्री मे कभी-कभार ही अन्दरून शहर काकोई निम्न-मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी नजर आता था । " [1] प्रदर्शनी देखने आनेवाला उच्चवर्ग मानो खुद कुछ देखने नहीं आया, बल्कि वह खुद को दिखाने आया हो । उच्चवर्ग की औरते किसी चित्र के सामने खड़े होकर नितांत घरेलू किस्म की बातें करने लगती तो उनके इस आचरण से हर कोई दु:खी हो सकता है। लेकिन अगर जिस काम के लिये वहाँ आयी है, उसे छोडकर अन्य बातें ही वह करने लगे तो उससे कलाकारों की उपेक्षा तो ही की जाती है परंतु उच्चवर्ग की मानसिकता का पता हमे चलता है ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी ने मध्यवर्ग मे आर्थिक विवशता किस प्रकार दिखाई देती है और उसके क्या-क्या परिणाम होते हैं इस बात का चित्रण अपने उपन्यास "निमिषा" मे किया है । निमिषा के पिता मिलिट्री एकाउँटेण्ट हैं । जब निमिषा की माँ को आँखों की शिकायत होने लगती है, और महिनो इलाज कराने के बाद भी ठीक नहीं होती है तो ऑपरेशन कराने सलाह डाक्टर देते हैं लेकिन पैसों की कमी या पत्नी के प्रति प्यार के कारण वे ऑपरेशन नहीं करा पाते और इस बिमारी मे घुलती उनकी पत्नी मर जाती है । अर्थाभाव मध्यवर्गीय मनुष्य को कितना त्रस्त करता है इसका उदाहरण हमें यहाँ मिलता है। अर्थाभाव मध्यवर्गीय मनुष्य को कितना दु:खी बना देता है, इस बात का चित्रण हमें गोविन्द के चरित्र में देखने को मिलता है । जब वह निमिषा से पहली बार मिलता है तो तीन कफ लिक्सवाली कमीज देखकर निमिषा को अचरज होता है । तो अर्थाभाव ही चाहे उसका कारण रहा है, फिर भी वह स्पष्टीकरण करता है - "दूसरी कोई कमीज धुली हुई नहीं थी । इसकी आस्तीनें छोटी हो गयी थी, मैंने कफ जरा खुवाकर सिंगल करा दिये तो बड़ी हो गयी । तब कफ जरा छोटे करा दिये और दोनों के काज के बीच एक-एक काज और करा दिया । तीन कफ लिक्स अजीब तो लगते हैं लेकिन नयी कमीज बनवाने की

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - ६०-६१ ।

बनिबस्त मुझे दो जोड़ा कफ लिक्स खरीदना सस्ता लगा । "[1] अर्थाभाव उसे अत्यंत दयनीय बना देता है ।

मध्यवर्गीय लोगों में दोस्तों को दोस्ती कैसी होती है, यह दिखाने के लिए उपेंद्रनाथ अश्क ने गोविन्द के मित्र सुखबीर सन्धु का वर्णन किया है । गोविन्द पहली बार जब "निमिषा" से मिलता है तो एक काव्यप्रेमी से पीछा छुड़ाने के लिए, पैरो में चोट होते हुए भी, अपने दोस्त सुखबीर सन्धु एक ऐसा मध्यवर्गीय व्यक्ति है जो कोई मेहमान घर पर आ जाए तो सामान जाने के लिए बाजार मे दौड़ता है । आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद भी उसके मन मे दोस्त के प्रति प्यार है । जब गोविन्द उसे अपनी चोट के बारे में बताता है तो सन्धु अपना नहाना रोककर पहले गोविन्द के घटने सेक देता है । वह बिना हिचकिचाहट के सन्धु की पत्नी को चाय और निंबू की शिकंजी बनाने के लिए कहता है । अपनी जीवन कहानी सुनाते वक्त तो उसे सन्धु का ख्याल ही नहीं आता । जब वह खाने के बारे में पूछने आता है तभी उन्हें वक्त का ख्याल आता है । इतने होते हुए भी सन्धु इतनी देर अपने मित्र के साथ उसके घर में बैठनेवाली निमिषा को और न गोविन्द को ही कुछ पूछता है । मध्यवर्गीय लोगों में दोस्ती कैसी है, इस बात का पता इससे चलता है ।

मध्यवर्गीय लोगों की भावना कैसी होती है, उस बात का पता हमें रेलों के बारे में लेखक के द्वारा दी गयी जानकारी से चलता है । गोविन्द जब निमिषा को अपने प्लज करने के फैसले के बारे में खत लिखता है तो निमिषा रेल से लाहौर आने लगती है । तो रेलो की उस जमाने मे कैसी स्थिति होती है, इसका वर्णन किया गया है । उस जमाने मे रेल के जो चार दर्जे होते थे, उनमे से इण्टर में सफर करनेवाले यात्रियों के बारे में लेखक बताता है - "इण्टर में सफर करनेवाले केवल गद्देदार सीटों पर यात्रा करने का सुख ले सकते थे और केवल इसी सुख के लिए किराया ज्यादा देते थे । थोड़ी सुविधा यह भी रहती कि भीड़ कम होती और उनके मध्यवर्गीय अहम् को कियात सतोष मिल जाता।"[2]

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १०६ ।
२. - वही - पृष्ठ - १२८ ।

इस प्रकार यहाँ मध्यवर्गीय लोग थोड़ी सुविधाओं में भी अपने आप को सुखी कैसे मान लेते हैं, इस बात का पता हमें चलता है ।

मध्यवर्गीय लोग अंतर्जातीय विवाह को कभी भी पसंद नहीं करते । एक तो समाज का डर उनके मन में होता है । जब गोविन्द निमिषा से शादी करने की बात करता है, तो उसे उसका बड़ा भाई समझाते हुए कहते हैं - "हम निम्न-मध्य-वर्ग के लोग हैं, कोई लखपति-करोड़पति नहीं है कि हमारे अवगुण भी गुण बन जाएँ । तुम्हारे इस अन्तर्जातीय विवाह के कारण ओम की शादी में झंझट उठ खडा हुआ तो क्या होगा ? " [1] अर्थात बड़ा भाई छोटे भाई की तय हुई शादी टूट जाने की सम्भावना पर बल देता है । यहाँ उच्चवर्गीय लोगों के अवगुण भी गुण बन जाने की स्थिति पर व्यंग्य किया गया है । बडा भाई खानदार पर लगनेवाले कलंक की बात भी करता है । इससे हम यह जान सकते हैं कि आज समाज मे कितना भी पढा-लिखा मध्यवर्गीय परिवार क्यों न हो, लोग क्या कहेंगे ? इस सवाल की वजह से कोई भी दाहस करने के लिए तैयार नहीं होता । यहाँ तक कि ऐसा कृत्य करनेवाले का पैर खिंचने की ही प्रवृत्ति अधिक होती है । आज कल मध्यवर्गीय परिवारों में पारिवारिक विघटन अधिक दिखाई देता है । जब निमिषा के चाचा की शादी हो जाती है आर चाची-चाची घर में आती है तो वह अत्यंत ही छोटे दिल की, फूहड़ और फैशन करनेवाली, सलीके से दूर रहनेवाली होती है । इसी वजह से दादी की और निमिषा के चाची की नहीं पटती है । बाद में चाचाजी दफ्तर के उपर फ्लैट किराये पर ले लेते हैं और अपनी पत्नी और निमिषा को लेकर वहाँ रहने चले जाते हैं ।

निम्न मध्यवर्गीय प्रौढ लड़कियों की क्या स्थिति होती है इसकी जानकारी हमें माला के सुहागरात वाले बर्ताव से ही देखने को मिलती है । जब गोविंन्द माला को निमिषा के बारे में बताता है तब भी वह "कंजका" [कुआरी] की पुजा की बात करती है । तब गोविन्द उसपर सोचता है - "ये साली छोटे कस्बों के घरों में बंद निम्न-मध्यवर्ग की अनपढ़ और अधपढ़ लडकियाँ

---

1. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - १७७ ।

. . . . . अपने ब्याह की प्रतिक्षा करती हुई यही सब खुराफ़ात सोचती और करती होगी । "[1] जब गोविन्द की पत्नी उसे बाताती है कि उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी काली झाँइयाँ क्यों है ? तो वह कहती है कि उसकी माँ ने उसे बताया था कि मुटियार लड़की को पेटभर नही खाना चाहिए । दूध-घी से परहेज करना चाहिए । काम सिरपर चढ जाता है । जब उसने सुना कि गोविन्द सगाई तोड़ना चाहता है, तो उसकी भू सूख गयी । मध्यवर्गीय स्त्रियों की मानसिकता पर यहाँ व्यंग्य किया गया है । इसके पश्चात न चाहते हुए भी गोविन्द सुहागरात मनाता है । लेकिन जब दूसरे दिन सुबह उसकी पत्नी उसकी पाकदामनी का सबूत दिखा देना चाहती है तो उसे अत्यंत गुस्सा आता है । निम्न मध्यवर्गीय युवतियों की इस स्थितिपर व्यंग्य करते हुए गोविन्द कहता है - "अपनी पाकदामनी को बचाती हुई निम्न मध्यवर्गीय घरों की घुटन में बंद लड़कियाँ, जाने कैसी-कैसी मानसिक रति से नापाक हुआ करती हैं । "[2] इस प्रकार निम्न मध्यवर्ग की युवतियों का अत्यंत यथार्थ चित्रण अश्क जी ने यहाँ किया है।

मध्यवर्गीय समाज में उच्चवर्गीय लोगों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति होती है । निमिषा की चाची भी एक ऐसी ही औरत है । चाचा जी घर में डाईनिंग टेबल ले आते हैं लेकिन चाची को टेबल-मैनर्स का ज्ञान नहीं है । वह मेजपर बैठकर "हाऊ-हप्प" खाने लगती है । किसी दूसरे से पूछती भी नहीं अर्थात अनुकरण करना हम जानते हैं लेकिन वह सिर्फ दिखावा अधिक होता है ।

मध्यवर्गीय परिवार में बच्चे होना भी एक ऐयाशी मानी जाती है क्योंकि एक तो महँगाई बढ चुकी है और कमानेवाला अकेला पति होता है । उसी पर सारा घर निर्भर करता है । ऐसी स्थिति में बच्चों का खर्चा भी मनुष्य को बड़ा कठिन काम लगता है । बच्चे भगवान की देन है, यह धारणा ही आधुनिक काल तक आते-आते खत्म हो चुकी है । गोविन्द अपनी पत्नी को यही बाते समझाता है - "बच्चे मुझे अच्छे लगते हैं, लेकिन आर्टिस्ट के नाते

---

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २२९ ।

२. - वही , पृष्ठ - २३२ ।

बच्चों को मै अपने लिए लग्जरी [Luxury] ऐय्याशी मानता हूँ, जिसे मैं आज एफोर्ड नहीं कर सकता। " [१] एक तो गोविन्द अकेला ही कमाता है और वह भी एक आर्ट टीचर होने के नाते उसे तनखा बहुत कम मिलती है, इस दृष्टि से देखा जाए तो उसके विचार एकदम सही है जो पूरे मध्यवर्ग की प्रतिक्रिया हो सकते है । बाद मे जब उसकी पत्नी गर्भ धारण करती है तो वह स्वयं ही बच्चे का झंझट खत्म करने के लिए उससे कहता है ।

मध्यवर्गीय लोग कितनी छोटी-छोटी बातों में खुश होते हैं, बात को हम कनक के चरित्र से देख सकते हैं । प्रदर्शनी में जब कनक के तीनों चित्र बिकते है तो वह अत्यंत गर्व महसूस करती है । इसी प्रकार का विचार निमिषा गोविन्द के लिए करती है कि उसके चित्र पर "सोल्ड" की चीट जब वह देखेगा तो उसे कितना अच्छा लगेगा । लेकिन हर कोई कनक की तरह नहीं होता । गोविन्द अपने चित्रों को अमूल्य मानता है और उसकी कोई किमत निर्धारित नहीं करता है ।

मध्यवर्गीय परिवारों में शादी के वक्त जो रस्मे निभायी जाती है, वे कई बार अत्यंत निरर्थक होती है। जैसे बाजा बजाया जाना, दुल्हे का घोडी पर चढना सेहरा बन्दी, कंगने की रस्म ये जो सारी रस्में हैं ये कभी-कभी बेमतलब की हो जाती है । जब किसी व्यक्ति की जबर्दस्ती शादी हो रही हो तो उसे यह सब फूहड़पन लगने लगता है । गोविन्द एक तो माला के साथ शादी के लिए तैयार ही नहीं था । जब उसपर शादी के लिए जबर्दस्ती की गयी तो अपने स्वभाव के विपरित उसने शादी की रस्मों में सहयोग दिया - "लेकिन अपनी दुल्हन का हाथ देखने के बाद उसका मन कुछ ऐसा बुझ गया था कि सचेत होने के बावजूद वह जड़ बना रहा था और मशीनी ढंग से मजाक सुनता और हँसता-हँसता और सभी रस्मों में योग देता रहा था। " [२] अगर गोविन्द की मर्जी से यह विवाह हो जाता तो उसे वही सब बातें अच्छी लगती ।

-

१. उपेंद्रनाथ अश्क - निमिषा, पृष्ठ - २७७ ।

२. - वही , पृष्ठ - १९३ ।

निष्कर्ष :-

उपेंद्रनाथ अश्क जी का जन्म मध्यवर्गीय परिवार में होने के कारण मध्यवर्गीय लोगों की समस्या किस प्रकार की होती उसे उन्होंने देखा, परखा और अपने साहित्य में दर्शाया है । इस वर्ग को निर्मिति या निर्माण कैसे हुआ होगा इस पर भी अश्क जी ने बहुत सोचा है । इस वर्ग के निर्माण के लिए जो-जो चीजें कारण बनी हैं, उन सभी का चित्रण उनके कई उपन्यासों तथा नाटकों में देखने को मिलता है । इस वर्ग की समस्याओं का चित्रण भी उनके साहित्य में दिखाई देती है ।

उपेंद्रनाथ अश्क जी का "निमिषा" उपन्यास भी मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण करनेवाला उपन्यास है । इस उपन्यास की तुलना हम उनके "बड़ी-बड़ी आँखे" उपन्यास से कर सकते हैं क्योंकि पात्रों के नाम बदलकर कई घटनाएँ वैसी की वैसी यहाँ चित्रित की गयी हैं । एक तरह से हम यह कह सकते हैं कि उस उपन्यास की घटनाएँ इसमें दोहरायी गयी हैं ।

अश्क जी ने "निमिषा" उपन्यास में निमिषा, गोविन्द, कनक, चाचाजी, चाचीजी आदि पात्रों के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन को सतानेवाला अर्थाभाव, दोस्ती, संकुचित-वृत्ति, अंतर्जातीय विवाह विरोध, प्रौढ़ लड़कियों की दयनीय स्थिति, बच्चों को ऐय्याशी माना-जाना, शादी की निरर्थक रस्में, पारिवारिक विघटन, उच्चवर्गीय लोगों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति, छोटी बातों में खुशी मानने की वृत्ति आदि कई बातों का चित्रण किया है। उपन्यास की नायिका और नायक दोनों भी पात्र मध्यवर्गीय पात्र हैं । इस पूरे उपन्यास में कनक और उसके परिवार के सदस्यों को छोडकर सारे पात्र मध्यवर्गीय पात्र हैं। इसी वजह से मध्यवर्गीय जीवन का इतना प्रभावशाली वर्णन करने का मौका उपन्यासकार को मिला है । प्रदर्शनों के वर्णन में उच्चवर्ग और मध्यवर्ग की तुलना करते हुए उच्चवर्गीय लोगों की प्रवृत्तियोंपर लेखक ने व्यंग्य किया है । उच्चवर्गीय लोगों में हरिश जैसा पात्र है जो सिर्फ कनक के पिता के पैसों को देखकर कनक को खुश रखने की कोशिश करता है । उसके दो चित्र हरिश खरीद लेता है । एक तरह

से भ्रष्टाचार को यहाँ बढावा मिलता है । लेकिन यहाँ निमिषा जैसी मध्यवर्गीय पात्र है जो केवल गोविन्द को खुश करने के लिए उसके बनाये चित्रों को खरीदना चाहती है परंतु उसकी कीमत ही तय नहीं है । ढेर सी समस्याएँ निमिषा के जीवन में आती हैं जिनका वह दृढता के साथ मुकाबला करती है और कनक जैसी उसीकी सहेली किसी ने जरा-सा कुछ कह दिया तो वह हौसला छोड़ बैठ जाती है ।

इस प्रकार हम यह पाते हैं कि मध्यवर्गीय जीवन का अत्यंत यथार्थ चित्रण करने में अज्ञेय जी सफल हो गये हैं । उनके अपने जीवन की प्रतिक्रिया ही मानो उनके साहित्य में देखने को मिलती है ।

— — —